Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

साक्षरता द्वारा मानव संसाधन का विकास: भोजपुर जिला के संदर्भ में एक भौगोलिक अध्ययन

Dr. Narendra Pratap Palit*

Associate Professor, Post-Graduation Geography Department, Maharaja College, Arrah

संक्षेप – *किसी प्रदेश का विकास वहां के कुशल मानव संसाधन पर निर्भर करता है। मानव संसाधन की गुणवत्ता के विकास में साक्षरता एक महत्वपूर्ण कारक है। इससे मानवीय मूल्यों के निर्धारण के साथ-साथ राष्ट्रीय भावनाओं का भी विकास होता है। साक्षरता के स्तर से किसी क्षेत्र के सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास स्तर का ज्ञान प्राप्त होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में बिहार राज्य के कृषि प्रधान जिला भोजपुर में साक्षरता की पूर्व एवं वर्तमान स्थिति का अध्ययन किया गया है। साक्षरता के विकास के लिए बिहार सरकार द्वारा कई कार्यक्रम संचालित हैं, जो निर्धन बच्चों को विद्यालय की ओर आकर्षित कर रहे हैं। सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में कई समस्याएं हैं, जिनका समाधान अत्यावश्यक है।*

शब्द-कुंजी – *साक्षरता, संसाधन, पाठ्यक्रम, सेवाकालीन प्रशिक्षण, गुणवत्ता*

----------X----------

मानव एक संसाधन है। वह उत्पादक, विनिमयकत्र्ता तथा उपभोक्ता भी है। प्रत्येक प्रदेश का भविष्य निर्देशन उसकी जनसंख्या के हाथ में निहित होता है। इस मानव संसाधन के विकास का मूलाधार साक्षरता है। साक्षरता किसी प्रदेश के सांस्कृतिक, आर्थिक व राजनीतिक विकास के लिए एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है। यह सामाजिक विकास मुख्यतः जनसंख्या नियंत्रण, स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण ह्रास-नियंत्रण, आधुनिकीकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, स्त्री व दलित उत्थान हेतु एक महत्त्वपूर्ण कारक है। वस्तुतः किसी प्रदेश की जनसंख्या की शैक्षणिक दशा उसके विकास का मापदंड होता है।

उद्देश्य

किसी भी प्रदेश के सुखद व उज्जवल भविष्य का ठोस आधार उस प्रदेश के शैक्षणिक विकास एवं साक्षरता के प्रसार में निहित होता है। इसके अभाव में किसी प्रदेश का सम्पूर्ण विकास तथा उनमें निवास करने वाले व्यक्तियों की रचनात्मकता की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षा का उद्देश्य सार्वभौम रूप से मानवीय व्यक्तित्व और चरित्र विकास, सामाजिक विकास और उच्चतम योग्यता तथा निपुणता को बढ़ाना है। क्षेत्र के विकास में साक्षरता के महत्त्व को दृष्टिगत कर यह अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन में निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए विभिन्न तथ्यों, आंकड़ों तथा सूचनाओं को आधार बनाया गया है। इन तथ्यों का आधार प्रकाशित व अप्रकाशित राजकीय एवं गैर-राजकीय स्रोतों को बनाया गया है। लगभग 100 लोगों के साथ अंतःक्रिया द्वारा प्राप्त अनुभव का भी प्रयोग किया गया है। वितरण प्रारूप एवं वृद्धि की प्रवृत्ति को दर्शाने के लिए सांख्यिकीय विधि का प्रयोग किया गया है। स्पष्टता, सहजता और सरलता के लिए यथासंभव मानचित्रो का भी प्रयोग किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

भोजपुर जिला बिहार राज्य में गंगा एवं सोन नदियों के दोआब में 25०10’ उत्तर से 25०45’ उत्तर अक्षांश तथा 84०21’ पूरब से 84०52’ पूरब देशांतर के बीच अवस्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 2337 वर्ग किलोमीटर है। जनगणना 2011 के अनुसार भोजपुर जिले की कुल जनसंख्या 27,28,407 है, जिसमें 15,99,151 व्यक्ति साक्षर हैं।

www.ignited.in

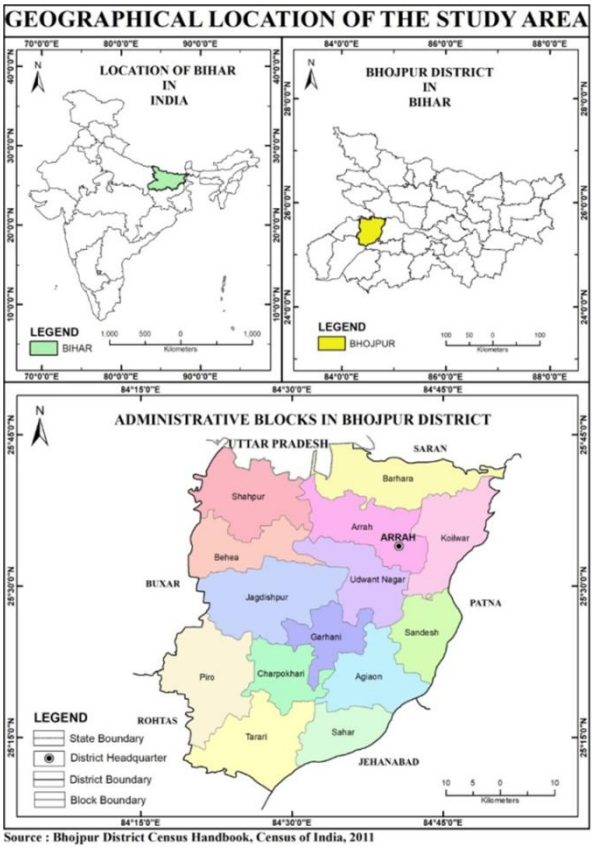

Source : Bhojpur District Census Handbook, Census of India, 2011

साक्षरता: विकास की कुंजी

बिहार राज्य में हरित क्रांति की शुरुआत भोजपुर क्षेत्र से हुई। भोजपुर जिला एक कृषि प्रधान क्षेत्र है, जहाँ 85 प्रतिशत लोग कृषिकार्य में संलग्न हैं। यहाँ की आबादी का 85.7 प्रतिशत ग्रामीण तथा 14.3 प्रतिशत शहरी है। जनगणना 2011 के अनुसार इस जिला की साक्षरता 70.5 प्रतिशत है, जिसमें पुरुष तथा स्त्री साक्षरता क्रमशः 81.7 प्रतिशत तथा 58.0 प्रतिशत है। जनगणना 1981 के अनुसार यहाँ की साक्षरता 31.35 प्रतिशत थी। 1981 से 2011 के बीच 30 वर्षों में साक्षरता में 39.15 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

यह सत्य है कि नगरीय साक्षरता ग्रामीण साक्षरता से अधिक होती है, क्योंकि नगरों को विशेष सुविधाएँ प्राप्त होती हैं। 2011 में जिला की ग्रामीण साक्षरता 69.2 प्रतिशत तथा नगरीय साक्षरता 78.1 प्रतिशत थी। उसी प्रकार, स्त्री साक्षरता से पुरुष साक्षरता अधिक होती है, अपितु शिक्षा के प्रसार व विकास के साथ स्त्री साक्षरता एवं पुरुष साक्षरता प्रतिशत के विशाल अंतर में काफी कमी आई है। तालिका-01 से स्पष्ट होता है कि 1981 में इस जिला की स्त्री साक्षरता दर 15.12 प्रतिशत थी, जबकि पुरुष साक्षरता उससे लगभग तीन गुना अधिक 46.68 प्रतिशत थी। 2011 में स्त्री साक्षरता बढ़कर 58.0 प्रतिशत तथा पुरुष साक्षरता 81.7 प्रतिशत हो गई और दोनों में अंतर दो गुना से भी कम हो गया। स्त्री शिक्षा में वृद्धि के साथ ही मानव संसाधन में चमत्कृत विकास होता है।

तलिका-01 से स्पष्ट है कि भोजपुर जिला की साक्षरता (70.5 प्रतिशत) राष्ट्रीय साक्षरता से कम, परन्तु राज्य की साक्षरता (61.8 प्रतिशत) से अधिक है। यहाँ की पुरुष साक्षरता देश की पुरुष साक्षरता के लगभग है।

तालिका-01

साक्षरता (प्रतिशत में)

वर्ष	भारत			बिहार			भोजपुर		
	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री	व्यक्ति	पुरूष	स्त्री
1981	43.52	56.38	29.76	26.20	38.11	13.62	31.35	46.68	15.12
1991	52.21	64.13	39.29	37.49	51.37	21.99	46.74	67.40	26.09
2001	65.38	75.85	54.16	47.53	60.32	33.57	59.00	74.78	42.81
2011	74.04	82.14	65.46	61.80	71.20	51.50	70.50	81.70	58.00

स्रोत : भारत की जनगणना

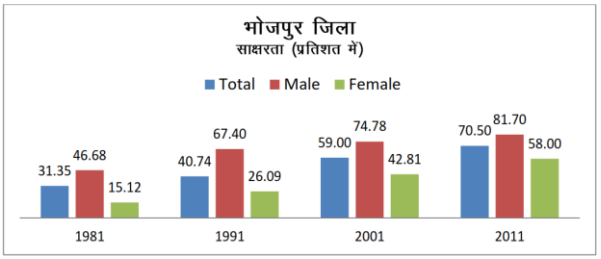

तालिका-02

भोजपुर जिला में प्रखंडवार साक्षरता दर (1991, 2001 एवं 2011)

क्र. सं.	प्रखंड	1991			2001			2011		
		कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री	कुल	पुरुष	स्त्री
1	आरा सदर	56.48	73.69	40.84	70.31	81.90	56.90	69.88	82.20	56.01
2	बड़हरा	40.26	56.53	22.18	58.00	72.20	41.20	69.10	80.50	56.00
3	कोईलवर	51.65	70.56	30.24	60.90	74.80	44.60	70.70	82.21	57.79
4	संदेश	45.61	66.82	22.89	55.30	71.90	37.10	66.73	80.38	51.75
5	उदवंतनगर	45.78	63.64	22.83	60.40	77.00	42.10	69.41	81.43	56.00
6	स्हार	46.40	66.70	24.14	57.70	75.00	39.40	67.06	79.76	53.95
7	अगिआंव	–	–	–	57.20	75.20	37.40	67.90	81.15	53.40
8	पीरो	48.95	68.86	27.35	60.10	76.40	42.70	70.43	82.91	56.98
9	त्रारी	48.73	68.78	28.72	61.10	77.40	43.30	71.04	83.02	58.04
10	चरपोखरी	46.24	67.70	23.43	57.90	73.10	40.30	68.86	81.90	54.82
11	गड़हनी	–	–	–	57.60	75.00	38.80	66.77	79.14	53.29
12	जगदीशपुर	46.88	61.25	30.72	51.80	67.70	34.40	67.70	79.65	54.57
13	शाहपुर	41.85	60.45	21.10	55.20	70.80	37.40	69.98	80.70	57.94
14	बिहिया	45.58	61.64	25.18	56.70	69.30	42.50	69.41	81.20	56.56
15	भोजपुर जिला	46.74	67.40	26.90	59.00	74.78	42.81	70.47	81.75	58.02

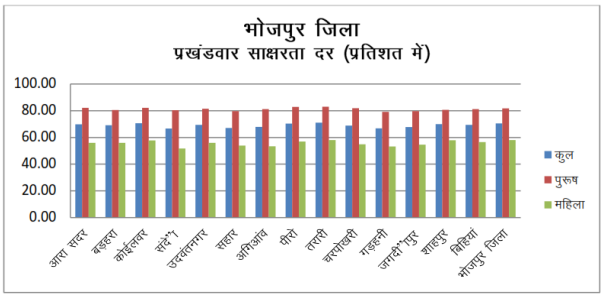

www.ignited.in

साक्षर एवं निरक्षर जनसंख्या

जनगणना 2011 के अनुसार भोजपुर जिला की कुल जनसंख्या 27,28,407 है, जिसमें 15,99,151 व्यक्ति (70.5 प्रतिशत) साक्षर एवं 11,29,256 व्यक्ति (29.5 प्रतिशत) निरक्षर हैं। 0-6 आयु वर्ग के बच्चों की संख्या 4,59,187 है।

तालिका-01 से स्पष्ट होता है कि तरारी प्रखंड (71.04 प्रतिशत) सबसे अधिक तथा संदेश प्रखंड (66.73 प्रतिशत) सबसे कम साक्षर है। प्रखंडवार साक्षर जनसंख्या अग्रोक्त प्रकार हैं - आरा सदर 70.00 प्रतिशत, बड़हरा 69.10 प्रतिशत, कोईलवर 70.70 प्रतिशत, संदेश 66.73 प्रतिशत, उदवंतनगर 69.41 प्रतिशत, सहार 67.06 प्रतिशत, अगिआंव 67.90 प्रतिशत, पीरो 70.43 प्रतिशत, तरारी 71.04 प्रतिशत, चरपोखरी 68.86 प्रतिशत, गड़हनी 66.77 प्रतिशत, जगदीशपुर 67.70 प्रतिशत, शाहपुर 69.98 प्रतिशत, बिहियां 69.41 प्रतिशत।

शिक्षा सुविधा

भारतीय संविधान के 45वें अनुच्छेद के आलोक में यहाँ शिक्षा को सर्वसुलभ करने के लिए सफल प्रयास हुए हैं। इस जिला में प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय शिक्षा की सुविधा उपलब्ध है। यहाँ 1142 प्राथमिक विद्यालय, 817 मध्य विद्यालय, 131 उच्च तथा 23+2 उच्च विद्यालय प्रत्यक्षतः बिहार सरकार द्वारा संचालित हैं। यहाँ 05 अंगीभूत तथा 09 सम्बद्ध महाविद्यालय, 04 शिक्षा महाविद्यालय, 01 विधि महाविद्यालय तथा 01 विश्वविद्यालय है। भोजपुर जिला की शैक्षणिक सुविधा को तालिका-03 से स्पष्ट किया जा सकता है -

तालिका-03

भोजपुर जिला में प्रखंडवार शिक्षण संस्थान (2018)

क्र. सं.	प्रखंड	प्राथमिक विद्यालय	मध्य विद्यालय	माध्यमिक विद्यालय	10+2 विद्यालय	महाविद्यालय	कुल शैक्षणिक संस्थान
1	आरा सदर	117	91	20	4	10	242
2	बड़हरा	88	68	10	2	–	168
3	कोईलवर	72	57	10	1	–	140
4	संदेश	61	39	9	1	–	110
5	उदवंतनगर	77	56	9	1	–	143
6	सहार	71	54	11	1	–	137
7	अगिआंव	83	52	6	2	–	143
8	पीरो	116	81	9	1	2	209
9	तरारी	100	70	8	3	–	181
10	चरपोखरी	61	42	6	–	–	109
11	गड़हनी	52	36	4	–	–	92
12	जगदीशपुर	116	81	11	3	2	213
13	शाहपुर	67	48	10	2	–	127
14	बिहियां	61	42	8	2	–	113
	कुल	1142	817	131	23	14	2127

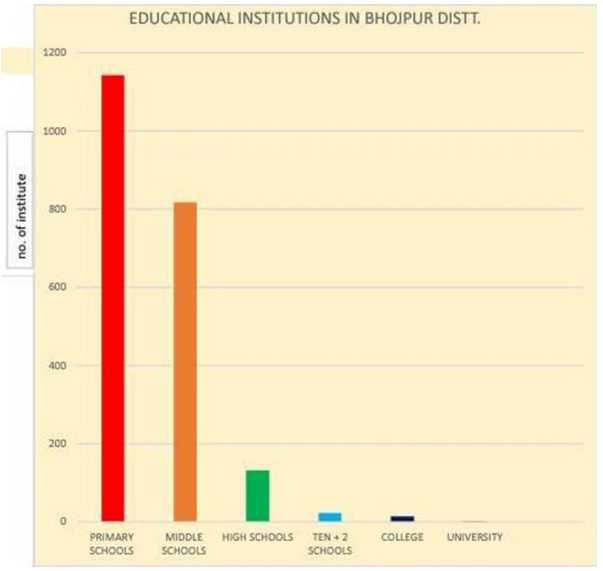

यहाँ की शिक्षा व्यवस्था स्पष्टतः तीन वर्गों में विभाजित है - प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक तथा विश्वविद्यालय शिक्षा।

प्राथमिक शिक्षा - इसके अन्तर्गत जिला में 1142 प्राथमिक तथा 817 मध्य विद्यालय हैं, जहाँ 4,26,243 छात्र-छात्राएँ नामांकित हैं तथा 10,736 शिक्षक कार्यरत हैं। इन विद्यालयों की देख-रेख, शिक्षकों की नियुक्ति, पाठ्यक्रम एवं पुस्तकों का निर्धारण राज्य सरकार करती है। शिक्षकों, प्राथमिक व मध्य विद्यालयों तथा छात्रों की संख्या तालिका-04 से स्पष्ट होती है -

तालिका-04

भोजपुर में शिक्षक, छात्र-छात्रा तथा प्राथमिक व मध्य विद्यालयों की संख्या (2018-19)

विद्यालय	विद्यालय की संख्या	शिक्षक की संख्या	छात्र–छात्राओं की संख्या
प्राथमिक	1142		2,65,618
मध्य	817	10736	1,60,625
कुल	**1959**	**10736**	**4,26,243**

स्त्रोत : जिला शिक्षा पदाधिकारी कार्यालय, भोजपुर

जिले के अधिकांश मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्र में अवस्थित प्राथमिक एवं मध्य विद्यालय शिक्षकों के अभाव की समस्या से ग्रसित हैं। यद्यपि बिहार शिक्षा परियोजना द्वारा डी.पी.ई.पी. कार्यक्रम चलाया जा रहा है, जो शिक्षकों की गुणवत्ता में वृद्धि, शिक्षण सामग्री के निर्माण, भवन, शौचालय, पेयजल आदि की सुविधा इन विद्यालयों को प्रदान

www.ignited.in

कर रही है, तथापि प्राथमिक शिक्षा में अपेक्षित गुणात्मक सुधार नहीं हो सका है।

प्राथमिक शिक्षा की असफलता का एक कारण जनता की दयनीय आर्थिक दशा भी है। गाँव के निर्धन लोग अपने बच्चों को स्कूल भेजने की जगह परिवार के लिए कुछ धनोपार्जन करने के लिए लगा देते हैं।

माध्यमिक शिक्षा - भोजपुर जिला में 131 माध्यमिक विद्यालय हैं। माध्यमिक शिक्षा बच्चों के समक्ष प्राथमिक शिक्षा से अलग शिक्षा कार्यक्रम की विविधता प्रस्तुत करती है, जिसे बच्चों को रूचि एवं क्षमता के विरुद्ध भी स्वीकार करना पड़ता है। यहाँ माध्यमिक शिक्षा प्रदान करने के लिए अलग-अलग भाषा माध्यम अपनाए जाते हैं। वस्तुतः माध्यमिक शिक्षा के पिछड़ेपन के कई कारण हैं।

उच्च शिक्षा – उच्च शिक्षा के अन्तर्गत तीन वर्षीय स्नातक, दो वर्षीय स्नातकोत्तर शिक्षा, व्यावसायिक एवं तकनीकी शिक्षा आते हैं। नई शिक्षा नीति में माध्यमिक शिक्षा का विस्तार दो वर्षीय उच्च माध्यमिक शिक्षा तक किया गया है। यहाँ के प्रत्येक डिग्री कॉलेज में इसकी शिक्षा दी जाती है।

यहाँ 23 उच्च माध्यमिक (10+2) विद्यालय, 14 महाविद्यालय तथा 01 विश्वविद्यालय है। यहाँ व्यवसायिक शिक्षा के रूप में बी.सी.ए., एम.सी.ए. बायोटेक्नोलॉजी, बी.बी.ए., एम.बी.ए. की डिग्री शिक्षा दी जाती है। बी.एड. शिक्षण संस्थानों की संख्या 05 है। चिकित्सा एवं अभियांत्रिकी शिक्षा का यहाँ अभाव है, जिसकी स्थापना की बात सरकार द्वारा की जा रही है।

शिक्षा व्यवस्था और विकास

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में बाल शिक्षा के प्रसार पर भारत सरकार ने विशेष ध्यान दिया है। महिला एवं बाल विकास विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा बच्चों की पोषण संबंधी राष्ट्रीय कार्य योजना बनाई गई है, जो शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग कर रही है। इस योजना में लड़कियों के पोषण व स्वास्थ्य सुधार पर विशेष जोर दिया जा रहा है, जिससे स्त्री शिक्षा तथा उसका स्तर बढ़ सके।

वर्तमान में विद्यालय के बच्चों के पोषण संबंधी अनेक शैक्षणिक व्यवस्था सरकारी तथा गैर-सरकारी संगठन द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे हैं। ये योजनाएँ निम्नलिखित हैं -

1. **प्रारंभिक बाल शिक्षा योजना (Early Childhood Care and Education System):-** यह योजना शिक्षा विभाग द्वारा 1982 में प्रारंभ किया गया। यह योजना महिला एवं बाल विकास विभाग को हस्तांतरित कर दी गई। इस योजना का उद्देश्य 3-6 वर्ष के बच्चों में गामक, ऐन्द्रिक, शारीरिक तथा मानसिक विकास करना है, जिससे वह प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश योग्य हो सकें।

2. **समन्वित बाल विकास कार्यक्रम (Integrated Child Development Programme):-** इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 6 वर्ष तक की आयु के बच्चों में पोषाहार तथा स्वास्थ्य जांच की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं।

3. **मध्यान्ह भोजन योजना (Mid-day Meal System):-** मध्यान्ह भोजन योजना शिक्षा मंत्रालय का एक महत्त्वपूर्ण पोषण पूरक कार्यक्रम है, जो जिले के प्राथमिक विद्यालयों में चलाया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के बच्चों, मुख्यतः निम्न आर्थिक स्थिति वाले बच्चों के पोषण स्तर को बढ़ाना है। इस योजना के अन्तर्गत आने वाले 1-5 वर्ग के बच्चों के पोषण में सुधार हो रहा है। साथ ही, विद्यालय में बच्चों की संख्या तथा उपस्थिति भी बढ़ी है।

4. **विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम (Education Under School Health Programme):-** विद्यालय स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यालय में स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा को महत्त्व दिया गया है। इसके लिए प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर में स्वास्थ्य संबंधी पाठ्यक्रम का विकास किया गया है।

समस्या एवं समाधान

जिला में निम्न साक्षरता के कारणों को ज्ञात करने के लिए जिले के कुछ ग्रामीण विद्यालयों में सम्पर्क किया गया, जिससे स्पष्ट हुआ कि साक्षरता के विकास में मुख्यतः कमजोर आर्थिक-सामाजिक संरचना बाधक है। सामाजिक-आर्थिक वैषम्यता, आधारभूत सुविधाओं का अभाव, शिक्षा योजनाओं के क्रियान्वयन में ईमानदारी की कमी, प्रादेशिक शिक्षा नीति का अभाव, शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाने की असमर्थता, जनजागरण का अभाव इत्यादि कारणों ने साक्षरता को प्रभावित किया है।

www.ignited.in

शिक्षा पाठ्यक्रम में अनावश्यक बोझ, शिक्षण कार्य में केवल सूचना संग्रहण, शिक्षकों में सीमित अध्यापन क्षमता, गैर-शैक्षणिक कार्यों में शिक्षकों की संलग्नता, शिक्षक-छात्र अनुपात में विशाल अंतर आदि कारक भी साक्षरता के पिछड़ेपन के कारण हैं।

मानव संसाधन के विकास के लिए स्वास्थ्य तथा पोषण शिक्षा पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में स्वास्थ्य एवं पोषण शिक्षा केवल सूचना प्रदान करते हैं, आवश्यकता उसे व्यावहारिक रूप देने की है। इसके विकास के लिए विद्यालयों में पूरे समय विद्यार्थियों के साथ ऐसा क्रियाकलाप किया जाए, जिससे उनके आचार एवं व्यवहार में परिवर्तन हो सके।

विद्यालयों में योग्य एवं निपुण शिक्षकों की कमी है। वे पाठ्यक्रम में परिवर्तन के अनुरूप अध्यापन कार्य में विविधता नहीं ला पाते हैं और न ही बच्चों के मनोविज्ञान को समझ पाते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को सेवापूर्व एवं सेवाकालीन प्रशिक्षण दिया जाए। शिक्षकों का भी मूल्यांकन हो।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन का निष्कर्ष है कि क्षेत्र के मानव संसाधन के विकास के लिए प्राथमिक शिक्षकों तथा ग्रामीण स्वास्थ्यकर्मियों के बीच समन्वय एवं सहयोग स्थापित हो। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सेवा का सहयोग लिया जाए। शिक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य एवं पोषण पर भी ध्यान दिया जाए। विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर चलाए जा रहे पोषण कार्यक्रम का समय-समय पर मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। अनुकूल परिणाम की प्राप्ति हेतु बच्चों के विकास के लिए पोषण शिक्षण पर विशेष बल देने की जरूरत है। विद्यालय एवं महाविद्यालय स्तर पर पर्यावरण शिक्षा दी जाए। इसके अभाव में मानव अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। आज ज्ञानवान मानव सम्पदा के बढ़ते महत्त्व को देखते हुए शिक्षा के व्यापक प्रचार-प्रसार की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची:-

1. District Census Hand Book, 1981, 1991, Bhojpuri District Census of India, 2011.

2. भोजपुर जिला: एक झलक, 2001-02, जिला सांख्यिकी कार्यालय, भोजपुर.

3. Singh, Girija & Singh, Ramanuj, Human Resource Development through Growth of Literacy with Special Reference to Bihar (Geographical Perspective), Journal of BAG, Vol. IV, 2003.

4. Yojna, Vol. 42, No. 12, Pg. 15-16.

Corresponding Author

Dr. Narendra Pratap Palit*

Associate Professor, Post-Graduation Geography Department, Maharaja College, Arrah

www.ignited.in